International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 10, October - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.101 |

मत्स्य पालन और मछुआरों के सामाजिक आर्थिक जीवन का समाजशास्त्रीय सन्दर्भ

डॉ० कमलेश कुमार
एम० ए०, पी-एच० डी० (समाजशास्त्र),
तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

परिचय : भारत में मत्स्यपालन व्यवसाय से जुड़े हुए समुदाय को मछुआरा समुदाय कहा जाता है। यद्यपि देश के समुद्रतटीय जल पर मत्स्य व्यवसाय से जुड़े मछुआरों की स्थिति 'इनलैंड फीसरीज' से जुड़े मछुआरों की स्थिति से अच्छी है; और वे संगठित भी हैं, लेकिन तालाबों, नदियों, जलाशयों, चौर आदि जल क्षेत्रों से जुड़े हुए मछुआरों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति निम्न है एवं वे प्रायः असंगठित भी हैं। बिहार का आर्थिक व्यवसाय मुख्य रूप से कृषि, पशुपालन एवं मत्स्य पालन पर निर्भर है। मत्स्यपालन एवं अन्य जल-जीवों पर आधारित उद्योग समाज में भोजन सुरक्षा एवं रोजगार उपलब्ध कराने में महत्त्वपूर्ण योगदान देने के अतिरिक्त अच्छी आय प्राप्त करने के एक महत्त्वपूर्ण साधन भी हैं। बिहार में मछुआरों को विभिन्न नामों से संबोधित किया जाता है जो सामाजिक दृष्टकोण से मुख्यतः जाति-सूचक है। इनमें प्रमुख हैं- बिन्द, बनपर, गोढ़ी, निषाध, सहनी आदि। इनका सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक जीवन मूल रूप से इनके मत्स्य व्यवसाय पर ही आधारित है। बिहार में मत्स्य उत्पादन की क्षमता एवं मत्स्य उत्पादन के स्रातों के बड़े पैमाने पर उपलब्धता के बावजूद यहाँ मत्स्य उत्पादन मांग के अनुसार काफी कम है; जिसकी पूर्ति के लिए अन्य राज्यों ,विशेष रूप से आंध्रप्रदेश पर निर्भर रहना पड़ता है। यहाँ की जलीय स्थिति मत्स्य उत्पादन का एक वृहत् अवसर प्रदान करने के साथ-साथ मछुआरा समुदाय को लाभप्रद व्यवसाय भी उपलब्ध कराता है। यही कारण है कि बिहार में मत्स्य व्यवसाय में तेजी से विकास हो रहे हैं तथा राज्य की कुल जी०डी०पी० में इसका योगदान भी पिछले दस वर्षों में दोगुना हुआ है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 10, October - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.101 |

मछुआरा समुदाय का आर्थिक जीवन मत्स्य व्यवसाय पर पूर्णतः आधारित है, लेकिन कुछ मछुआरे अन्य व्यवसायों जैसे–कृषि, मजदूरी, व्यापार आदि कार्यों को भी करते हैं। ये व्यवसाय उनके आर्थिक जीवन के द्वैतीयक साधन है। वास्तव में इनका आर्थिक जीवन उस क्षेत्र विशेष में उपलब्ध मत्स्य पालन एवं मत्सय व्यवसाय के साधनों एवं उनकी उपयोगिता पर निर्भर करते हैं। मछुआरों के विभिन्न व्यवसायिक आकार श्रेणीगत आधार पर विभाजित होने के कारण इनमें एक वर्गीय व्यवस्था का भी जन्म हुआ है। इसका आधार भी उनकी आर्थिक स्थिति में भिन्नता के तत्त्वों की उपस्थित हैं। लेकिन यह भी सही है कि विभिन्न समाजिक समस्याओं के निदान के लिए वे आपस में अंतःक्रिया भी करते है। फिर भी वर्गीय व्यवस्था के कारण उच्च आर्थिक स्थिति वाले मछुआरों द्वारा निम्न आर्थिक स्थिति वाले मछुआरों का आर्थिक शोषण भी किया जाता है।

मत्स्य पालन के सन्दर्भ में मछुआरों के आर्थिक स्थिति का निर्धारण उनके द्वारा उत्पादन किये जाने वाले मत्स्य के नश्ल पर भी निर्भर करते हैं। उन्नत नश्ल के मत्स्य उत्पादन एवं मत्स्य व्यवसाय करने वाले मछुआरों की आर्थिक स्थिति निम्न नश्ल के मत्स्य उत्पादन एवं मत्स्य व्यवसाय करने वाले मछुआरे की तुलना में उच्च होता है। हलाँकि, बिहार के अधिकतर मछुआरे निम्न किस्म के मत्स्य उत्पादन से ही जुड़े हुए हैं। इसके अतिरिक्त मछुआरों की आर्थिक स्थिति का संबंध उनके द्वारा उत्पादन किए गए मत्स्य की मात्रा से भी है। साथ ही, इनकी आर्थिक स्थिति इनके ऋण की आवश्यकता की पूर्ति एवं बाजार तंत्र की उपलब्धता पर भी निर्भर है। मछुआरों की आर्थिक स्थिति में संस्थागत आधार पर कई परिवर्त्तन भी हुए हैं। विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों एवं योजनाओं के प्रभाव से न केवल इनका आर्थिक विकास हुआ बल्कि इनका आर्थिक जीवन संगठनात्मक एवं संस्थागत आधार पर संगठित भी हुआ। धीरे–धीरे इनके आर्थिक व्यवस्था एक स्वतन्त्र इकाई का रूप ले रही है इनके आर्थिक जीवन में सुधार होने के साथ–साथ ये

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 10, October - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.101 |

अन्य व्यवसायों को एक सहयोगी एवं द्वैतीयक व्यवसाय के रूप में भी अपने आर्थिक जीवन में शामिल कर रहे हैं।

मछुआरों से संबंधित कई कार्यक्रमों का संचालन पूर्व में भी कृषि कार्यक्रमों के साथ प्रारंभ किए गये थे, लेकिन वास्तव में मछुआरों से संबंधित कल्याणकारी कार्यक्रमों के व्यापक प्रभाव बिहार मत्स्य जलकर प्रबंधन अधिनियम, 2006 एवं बिहार में कृषि रोड मैप के निर्माण के पश्चात पड़े। इसी कड़ी में बिहार में फीसरीज पॉलिसी 2008, मत्स्यपालन एवं मछुआरों के सामाजिक आर्थिक विकास में एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

कल्याणकारी कार्यक्रम उनके सामाजिक आर्थिक स्थिति में सुधार एवं विकास से संबंधित है, क्योंकि इनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति आपस में उतने घुले-मिले हुए हैं कि उन्हें एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। इनके लिए चलाए जा रहे सभी आर्थिक कार्यक्रमों से इनकी सामाजिक स्थिति एवं सामाजिक गतिशीलता प्रभावित होती है। इसलिए इनके हितों के लिए चलाये जाने वाले सभी कार्यक्रमों के उद्देश्य मछुआरों का सामाजिक एवं मानवीय विकास करना है। वास्तव में मछुआरों से संबंधित कार्यक्रमों को सरकार द्वारा केवल उनपर किये जाने वाले व्यय से सबंधित न होकर उनके सामाजिक, सांस्कृतिक, शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण की स्थिति, आवास, सामाजिक-आर्थिक चेतना, उनके परम्परागत मनोवृत्तियों आदि में परिवर्त्तन से संबंधित है।

मछुआरों के लिए दो स्तरों-एक केन्द्र तथा दूसरा, राज्य स्तर पर कल्याणकारी कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इनमें केंन्द्रीय स्तर पर चलाए जाने वाले कार्यक्रमों में मत्स्य पालक विकास अभिकरण योजना, मछुआरों के लिए सामूहिक जीवन दुर्घटना बीमा योजना, मछुआरों के लिए आवास एवं नागरिक सुविधाएँ योजना, मत्स्य

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 10, October - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.101 |

प्रशिक्षण एवं प्रसार योजना, मत्स्य विपणन योजना आदि प्रमुख हैं। राज्य स्तर पर चलाए जा रहे कार्यक्रमों में उन्नत नश्ल के मत्स्य अंगुलिकाओं का उत्पादन एवं अनुदानित दर पर वितरण योजना, मत्स्य प्रसार योजना, मत्स्य फसल बीमा योजना आदि प्रमुख हैं। साथ ही, इस संदर्भ में मत्स्य नीति भी मछुआरों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति को प्रभावित कर रहे हैं।

बाधाएँ : मछुआरों से संबंधित राजकीय कल्याणकारी कार्यक्रमों से उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में सकारात्मक परिवर्त्तन हुए है तथा उनमें अपनी व्यावसायिक विकास के प्रति जागरूकता भी बढ़ी है। मत्स्यपालन एवं व्यवसाय में वृद्धि एवं विकास हेतु चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों एवं योजनाओं से मछुआरों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में उत्थान के साथ–साथ राज्य के मत्स्य जलसंसाधनों के क्षेत्र, स्थिति एवं उत्पादकता में भी वृद्धि हुई है। बिहार में मत्स्यपालन हेतु 3200 कि०मी० नदी 1,00,000 हेक्टेयर चौर एवं फ्लडप्लेन वेट लैंड 9,000 हेक्टेयर, ऑक्सबो 7,200 हेक्टेयर रिजर्वायर तथा 6,9000 हेक्टेयर तालाब एवं पोखर उपलब्ध है। विभिन्न कल्याणकारी कार्यक्रमों से मत्स्य उत्पादन एवं इसकी अधिसंरचना में वृद्धि हो रही है। बिहार में जहाँ वर्ष 2012–13 में मत्स्य एवं फिश सीड उत्पादन क्रमशः 400.10 हजार टन एवं 4,738.30 हजार लाख था वही यह उत्पादन 2014–15 में बढ़कर क्रमशः 479.80 हजार लाख टन एवं 8,831.94 हजार लाख टन हो गया। साथ ही बिहार में विभिन्न राजकीय प्रयासों से वर्त्तमान में मत्स्य उत्पादन 5.7 लाख मैट्रिक टन हो गया। इस संदर्भ में 'फ्रेस वाटर' क्षेत्र में मत्स्य उत्पादन में प्रथम चार राज्यों को भी पीछे छोड़ दिया।

मछुआरों द्वारा नई तकनीकि के प्रशिक्षण प्राप्त कर उनका उपयोग किया जा रहा है, उन्हें अच्छे नश्ल के मत्स्य सीड उपलब्ध कराये जा रहे हैं, बाजार तंत्र को संगठित किये जा रहे हैं, उन्हें ऋण उपलब्ध कराये जा रहे हैं इत्यादि। इनसे मत्स्य

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 10, October - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.101 |

व्यवसाय एवं मछुआरों की स्थिति में निश्चित रूप से सुधार हुए हैं; लेकिन यह भी एक तथ्य है कि कार्यक्रमों के वांछित लाभ मत्स्य व्यवसाय एवं मछुआरों को प्राप्ति नहीं हो रहे हैं। वास्तव में, मछुआरों के विकास के मार्ग में कई अवरोधक एवं चुनौतियाँ खड़ी हैं। मछुआरों के विकास के मार्ग मुख्यतः दो तरह के अवरोधक एवं चुनौतियों को शामिल किये जा सकते हैं। एक, वैसे अवरोधक जिनसे मत्स्यपालन, मत्स्य उत्पादन एवं विपणन के सामने गंभीर चुनौतियाँ आती है। इन अवरोधकों के प्रभाव से उनके आर्थिक विकास के मार्ग में बाधा उत्पन्न होती है। दूसरा, वैसे अवरोधक जिनसे उनके सामाजिक विकास के मार्ग में चुनौतियाँ उत्पन्न होती है।

मत्स्यपालन में अच्छे नश्ल के सीड्स के उत्पादन एवं उपलब्धता में कमी एक बड़ी बाधा है। वर्त्तमान में 600 मिलीयन मत्स्य बीज की आवश्यकता है जबकि बिहार में 350 मिलीयन ही इसका उत्पादन होता है। इस कमी के लिए बिहार के मछुआरों को अन्य राज्यों द्वारा की जाने वाली आपूर्ति पर निर्भर रहना पड़ता है जिससे उनके मत्स्य उत्पादन की लागत में वृद्धि होती है। यहाँ 2 सरकारी एवं 26 निजी हैचरी है। इसके अतिरिक्त 121 सरकारी फिश सीड फार्म है जो सभी बंद की स्थिति में है। प्रशिक्षित प्रबंधकों की कमी है, चरी की कमी, जमीनों का अतिक्रमण, देखभाल की कमी है, प्राकृतिक स्टॉक की कमी, तकनीकि सुविधाओं की कमी इत्यादि के कारण यहाँ फिश सीड के उत्पादन की कमी है। ये स्थितियाँ मत्स्य उत्पादन के समक्ष एक गंभीर चुनौति प्रस्तुत करती है।

बिहार में जलकरों को मत्स्य विभाग को इसलिए सौपें गये कि इनमें वैज्ञानिक तकनीकि के माध्यम से मत्स्य पालन हो सके एवं इसका विकास सब्सीडी आधार पर किया जाय। इसके लिए मछुआरों के लिए ऋण भी उपलब्ध कराये जाते है; लेकिन विभाग के द्वारा सफलतापूर्वक इनके लक्ष्य को पूरा नहीं किया जा सका।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 10, October - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.101 |

इस व्यवस्था में कई स्तरों पर सरकारी हस्तक्षेप, इनइफिसएंट एक्सटैंसन डेलेब्री सिस्टम, बैकों एवं सहकारी समितियाँ का असहयोगात्मक रवैया इत्यादि इन जल क्षेत्रों में मत्स्य उत्पादन हेतु मछुआरों के सामने कई समस्याएँ खड़ी करती है। यद्यपि; बिहार जलकर प्रबंधन अधिनियम, 2006 में 'मछुआरों' को सपष्ट रूप से परिभाषित करने से, जिनमें परम्परागत रूप से मत्स्य व्यवसाय करने वालों को शामिल किया गया, एवं इन्हें इन जलकरों को लीज पर देने में प्रमुखता प्रदान की गई, से मछुआरों की कुछ समस्याओं का निदान संभव भी हुआ। फिर भी, सरकारी विभागों में व्याप्त भ्रष्टाचार मछुआरों के विकास में गंभीर चुनौतियाँ खड़ी करती है।

मछुआरों के विकास में सहयोग समितियों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है, लेकिन ये समितियाँ स्वयं कई समस्याओं से ग्रसित है। मत्स्य उद्योग की सहयोग समितियों की अक्षम आर्थिक स्थिति, इनमें प्रजातांत्रिक मूल्यों की कमी, अव्यवस्था एवं इससे जुड़े प्रभावशाली लोगों द्वारा इससे प्राप्त होने वाले लाभों का दुरूपयोग, पारदर्शिता एवं विश्वसनीयता की कमी, इन समितियों के सामने कई चुनौतियों को खड़ी करती है। सहयोग समितियों के निर्माण में यह विश्वास किया गया है कि यह समान हितों के विकास की एक महत्त्वपूर्ण दवा है, किन्तु यह विचार संभवतः सामाजिक प्रथाओं एवं मूल्यों की अपेक्षा करती है। इन समितियों को केवल संस्थागत ढॉचा प्रदान करने मात्र से ही समान सम्पत्ति स्रोतों में समुदाय के लोगों की सहभागिता को पूरा नहीं कर देती है। सहयोग समितियों के सामने वित्त की भी समस्या रहती है। इनके सदस्यों में साख संस्थाओं से ऋण लेने की अपेक्षा इनकी सदस्यता ग्रहण करने की प्रवृत्ति अधिक दिखाई पड़ती है, क्योंकि ये सदस्य वापसी की जिम्मेदारयाँ नहीं लेना चाहते।

इस प्रकार मछुआरों के जीवन के आर्थिक पक्ष जो मत्स्य उद्योग के विकास से जुड़े हुए हैं, के सामने कई चुनौतियाँ है जैसे–कमजोर संस्थागत स्थिति,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 10, October - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.101 |

पर्याप्त संसाधन एवं अधिसंरचना की कमी, प्रभावी मत्स्यनीति का आभाव, मत्स्य सहकारी समिति की अक्षमता, मत्स्य व्यवसाय में प्रबंधन की कमी, मत्स्य बीज तथा मत्स्य पूरक आहार की कमी, नवीनतम् तकनीकि का अभाव, आद्र जलभूमि में मल्टीआनरशिप का होना, कमजोर मत्स्य प्रसार तंत्र, मानव संसाधन की कमी, व्यावसायिक बैंकों की असहयोगात्मक रवैया, पूँजी की कमी इत्यादि।

भारत में आर्थिक विकास करने की चार प्रकार की सामाजिक समस्याएँ है। (1) पुराने सामाजिक संगठन का बदला जाना और सामाजिक सम्बन्धों के ताने–बाने का उदय (2) पुरानी सामाजिक संस्थाओं में सुधार या तिलांजलि और नई प्रकार की सामाजिक संस्थाओं का विकास करना (3) सामाजिक नियंत्रण के पुराने स्वरूपों को बदलना या हटाना और नये प्रकार की सामाजिक शक्ति का सृजन होना और (4) सामाजिक परिवर्त्तन के पुराने स्त्रोतों का समापन या उनपर पुनर्विचार और सामाजिक परिवर्त्तन के लिए नये उपायों का निर्धारण। इन सभी समस्याओं के संदर्भ में मछुआरों के विकास की चुनौतियों को समाज– शास्त्रीय दृष्टिकोण से देखने से यह स्पष्ट है कि इस समुदाय के सामाजिक संगठन में न तो पूर्णतः परिवर्तन आया है और न ही इसके स्थान पर किसी नये सामाजिक संगठन का उदय हुआ है बल्कि इनकी परम्परागत सामाजिक संगठन में आधुनिक सामाजिक संगठन के कुछ नये तत्त्वों का ही समावेश हुआ है। जहाँ एक ओर मत्स्य उद्योग में नये एवं वैज्ञानिक तकनीकि का समाहित करने के प्रयास हो रहे हैं वही दूसरी तरफ मछुआरा समुदाय के एक बड़े हिस्से पर उनके परम्परागत सामाजिक एवं जातीय व्यवस्था का भी प्रभाव बना हुआ है। यह स्थिति उनके आर्थिक एंव सामाजिक विकास के सामने एक चुनौति उत्पन्न करती है।

मछुआरों के विकास हेतु चलाये जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों से जहाँ इनकी स्थिति में सकारात्मक परिवर्त्तन हुआ वहीं इनके सामने चुनौति स्वरूप कुछ

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 10, October - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.101 |

समस्याओं का भी जन्म हुआ। इससे उनके सामाजिक सम्बन्धों एवं सामाजिक संस्थाओं की समस्याएँ उत्पन्न हुई। इनके समाज में नए सामाजिक संबंधों एवं संस्थाओं के उत्पन्न होने के साथ–साथ कुछ पुराने सामाजिक संबंधों एवं संस्थाओं के प्रभावकारी उपस्थिति भी बनी हुई है। ये स्थितियाँ उनके सामाजिक–आर्थिक जीवन में विकास के लिए चुनौतियाँ खड़ी करती है। मत्स्य व्यवसाय में नयी तकनीकि एवं बाजार तंत्र के प्रभावी होने से उनके श्रम विभाजन के परम्परागत स्वरूप को खत्म कर दिया एक नये सामाजिक एंव व्यावसायिक स्वरूपों को जन्म दिया। यद्यपि नयी तकनीकि से उनके उत्पादनों में वृद्धि हुई, लेकिन वे अपनी पुरानी व्यावसायिक कुशलता से दूर भी होते गए। इसके अतिरिक्त उनके सामने नयी व्यवस्था के साथ अपना सामांजस्य स्थापित करने में कठिनाईयाँ भी आने लगी। इसके अतिरिक्त मछुआरों के व्यवसायिक जीवन में बाजार वाद का गहरा प्रभाव पड़ने से उनके सामाजिक– आर्थिक जीवन में धन का प्रभाव बढ़ा। धन की अर्थव्यवस्था के प्रारंभ होने से परिवार के अंदर व्यक्ति का परमाणुकरण तथा पारिवारिक सम्बन्धों का विनाश प्रारंभ हो गया।

एक ओर बिहार में मत्स्य पालन के लिए जलक्षेत्र बड़े स्तर पर उपलबद्ध है, तो दूसरी ओर मत्स्य उत्पादन–दर काफी कम है। इसके लिए कई आर्थिक एवं व्यावसायिक समस्याएँ जिम्मेदार हैं। मत्स्यपालन हेतु जलक्षेत्रों का छोटा स्तर पर अपखंडित रहना, उन्नत नश्ल के मत्स्य बीज का आभाव होना, मछुआरों के पास साख एवं पूँजी की कमी, तालाबों की असुरक्षा, मत्स्य में होने वाली बीमारियों के रोकथाम हेतु साधनों की कमी, जलकर प्रबंधन अधिनियम 2006 द्वारा मत्स्य व्यवसाय को व्यावसायिक आधार पर प्रोत्साहित नहीं कर पाना, सरकारी सहमतियों के कार्यो एवं विश्वसनीयता में कमी, मत्सय व्यवसाय से संबंधित विभिन्न विभागों में सामंजस्य की कमी, मछुआरों

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 10, October - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.101 |

तकनीकि ज्ञान एवं उद्यमिता की कमी आदि ऐसी आर्थिक चुनौतियाँ हैं जिनसे मछुआरों के विकास अवरूद्ध होते हैं।

दूसरी ओर मछुआरों के जीवन के सामाजिक पक्षों में कुछ ऐसा तत्त्वों का समावेश है जिनसे उनका विकास वाधित होता है। मछुआरों के व्यवसाय वंशानुगत होने के कारण उनमें व्याप्त अशिक्षा, अंधविश्वास एवं तकनीकि दक्षता का अभाव है। वास्तव में यह व्यवसाय न केवल उनका रोजगार मात्र है बल्कि यह उनके जीवन की पद्धति भी है। गरीबी, इनमें उच्च जन्म दर का होना, स्वास्थ्य एवं पोषण से संबंधित समस्याएँ व्यावसायिक अनिश्चतत्ता, विभिन्न सामाजिक सेवाओं तक उनकी पहुँच में कमी, जाति आधारित समस्याएँ आदि कुछ ऐसी गम्भीर समस्याओं का सामना मछुआरा समुदाय के लोगों को करना पड़ता है जिनसे किसी न किसी रूप में उनके विकास के मार्ग में बाधा उत्पन्न होती है।

उपसंहार : मछुआरों के विकास एवं कल्याण के लिए कई कार्यक्रमों एवं योजनाओं को सरकार द्वारा चलाए जा रहे हैं; लेकिन यह भी सच है कि इनसे मछुआरों का आर्थिक एवं सामाजिक विकास वांछित स्तर पर नहीं हो पाया है। इनके विकास के मार्ग में कई चुनौतियाँ उपस्थित हैं जिनका नकारात्मक प्रभाव इनके विकास पर पड़ता है। वस्तुतः मछुआरों के विकास की चुनौतियाँ दो स्तरों–एक आर्थिक तथा दूसरा, सामाजिक, पर निर्भर है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 10, October - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 7.101 |

सन्दर्भ-सूची :

1. एस० सुब्रमन्यम : सोसियो-इकॉनोमिक वेरिएबुल्स ऑफ फीसरमैन इन हीराकुंड रिजर्वायर एण्ड देयर इंक्नोलॉजी ऍडोप्सन; पेपर प्रजेन्टड ड्यूरिंग दी नेट सीम ऑन रेबीराईन, मई 23-24 कोचीन, 2001
2. पी० के० चौहान : सोसियो-इॅकॉनोमिक स्टेटस ऑफ फीसरमैन ऑफ पोंग रिजर्वायर, लेक रिजवार्यर मैनेजमेंट, 18 (1) : 15-19, 2002
3. पी० वी० देहाद्री : यादव, स्टेट ऑफ दी इंडियन फारमरः ए मिलेनियम स्टडी-फीसरीज डेबलपमेंट ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2003 पृष्ठ-43
4. नीरज कु० गौतम : ''मछली पालन में रोजगार की संभावनाएँ'' प्रकाशित लेख कुरूक्षेत्र, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, जनवरी-2011 पृष्ठ-26
5. आर० एन० सिंह : दी सोसियो इंकोनॉमिक स्टेटस ऑफ फिसरमैन ऑफ डिस्ट्रीक्ट ऑफ रामपुर, उत्तरप्रदेश, प्रकाशित लेख, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ट्रेन्डस इन फिशरीज रिसर्च, वो० 3 इश्यू-3, 2014
6. सचिन मरडीकर : हूज फिस इन इट ऐनी वे,? महाराष्ट्राज स्ट्रगल टू किप एलाइव इट्स फीसरीज, प्रकाशित लेख, आई० डब्ल्यू० एम आई-टाटा, वर्ष-2005